सेंट एंड्र्यूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीतिअपार्टमेंट ,आई.पी.एक्सटेंशन,

पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२५-२६

कक्षा:-8	**विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक**	**पाठ:7 हींग वाला**

मौखिक कौशल

1. सावित्री के बच्चे होंगवाले से इसलिए चिते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि उनकी माँ हींगवाले को पैसे देती हैं तथा उसी का खयाल रखती हैं।

2. सावित्री ने हींग की कीमत सवा छह आने अदा की थी।

3. जब हींगवाला बहुत दिनों तक नहीं आया तो सावित्री ने सोचा कहीं हींगवाला खान तो नहीं मार डाला गया।

4. दशहरे के अवसर पर काली देवी का जुलूस निकला था।

5. खान जब बच्चों को साथ लेकर लौटा तो उसने सावित्री से कहा, "वक्त अच्छा नहीं, अम्माँ ! बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजा करो।"

लिखित कौशल

1. (क) खान हींग बेचा करता था।

(ख) खान अपने देश काबुल को जा रहा था। उसके लौटने का कोई निश्चित समय तय नहीं था, इसलिए वह सावित्री से हींग लेने की ज़िद कर रहा था।

(ग) सावित्री के सबसे छोटे बेटे ने अपने बड़े भाई से कहा, "भैया, माँगो ती भला माँ से पैसे, फिर हम लोग मलाई की बर्फ़ खाएँगे।"

(घ) सावित्री के बच्चे सोच रहे थे कि उनकी माँ सिर्फ़ खान को ही पैसे देती हैं। वे खान से चिढ़ रहे थे। यह सब देखकर सावित्री को बच्चों की बातों पर हँसी आ रही थी।

(ङ) सावित्री के पति हींग वाले खान को अंदर जाने से मना कर रहे थे।

(च) शहर में दंगा होने के कुछ दिनों बाद खान सावित्री से मिला तो खान ने ऐसा कहा था। उसके हिसाब से समझदार लोग झगड़ा नहीं करते यह तो मूर्खों का काम है।

(छ) शहर में कुछ दिन पहले दंगा हो चुका था। शाम को जुलूस में दंगा होने की आशंका थी। इसलिए सावित्री अपने बच्चों को जाने से रोक रही थी।

(ज) दंगे की खबर सुनकर सावित्री के हाथ-पैर जैसे ठंडे पड़ गए। उसे रह-रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था। वह पागल-सी हो गई। रात होते-होते वह फूट-फूटकर रोने लगी।

(झ) सुरक्षित लौटने पर बच्चों ने माँ से बतलाया कि अम्माँ, खान बहुत अच्छा है। दंगा होते ही श्यामू तो हमें छोड़कर भाग गया था तब खान ने ही हमें बचाया, नहीं तो आज हम भीड़ में मारे जाते।

2. (क) काबुल (ख) तीन (ग) चबूतरे (घ) काली (ङ) खान

मूल्यपरक प्रश्न

1. इस कथन से पता चलता है कि खान सावित्री की अपनी माँ के जैसा ही मानता था। उसे देश, धर्म और जाति से कोई मतलब न था।

2. इन पक्तियों द्वारा पता चलता है कि सावित्री के मन में खान के लिए अपने बच्चों जैसा प्यार था। सावित्री के मन की उधेड़बुन दिखाती है कि वह दूसरों के लिए चिंतित रहती थी। दूर देश का होने के बाद भी सावित्री और खान के बीच इनसानियत का गहरा रिश्ता बन गया था जिसमें धर्म, समाज और जाति के बंधन कोई मायने नहीं रखते।